प्रो० अब्दुल बारी का नेतृत्वकाल

प्रोफेसर अब्दुल बारी
1936-1947

प्रोफेसर अब्दुल बारी देश के गिने-चुने सच्चे, ईमानदार, त्यागी और बेवाक नेताओं में से एक थे। 1892 में बिहार के शाहाबाद (भोजपुर) जिले के एक गाँव में मौलवी कुर्बान अली के घर जन्मे अब्दुल बारी ने पटना कॉलेज से 1919 में स्नातकोत्तर (एम.ए.) की परीक्षा उत्तीर्ण किया था। इसके बाद गाँधीजी के अह्वान पर वे स्वतंत्रता संग्राम की ओर मुखातिब हुए। काँग्रेस कार्यकर्त्ता के रूप में पहली बार 1917 में उनकी मुलाकात गांधीजी से हुई थी। भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में 1921, 1931, 1940, और 1942 के आंदोलनों को एक सुदृढ़ गति प्रदान करने तथा पूर्वी भारत के मजदूरों को एकसूत्र में पिरोकर अपने कुशल प्रतिनिधित्व के द्वारा प्रगति के पथ पर लाने में प्रो. अब्दुल बारी की भूमिका अद्वितीय रही है। उनका व्यवहार बाकी राजनीतिज्ञों से बिल्कुल भिन्न

था। चाहे अंग्रेजी हुकुम्मत हो या उद्योग प्रबंधन, प्रो. बारी अपनी स्पष्टवादिता और बेवाक टिप्पणी से किसी को नहीं बख्शते थे।

1921 में जब सदाकत आश्रम पटना में एक राष्ट्रीय महाविद्यालय की स्थापना की गयी तब डा. राजेन्द्र प्रसाद की नियुक्ति प्राचार्य और बारी साहब को प्रोफेसर के रूप में हुई। 1922 के गाँधीजी के असहयोग आंदोलन में प्रो. बारी ने डा. राजेन्द्र प्रसाद के सहयोगी के रूप में सराहनीय योगदान दिया। 1923 में देशबन्धु चितरंजन दास और पंडित मोतीलाल नेहरू द्वारा गठित 'स्वराज्य पार्टी' के सम्पर्क में भी आए। प्रो. बारी दिन-प्रतिदिन अपनी ईमानदारी और कर्तव्यनिष्ठा की बदौलत राष्ट्रीय कांग्रेस के अग्रणी नेताओं की पंक्ति में गिने जाने लगे। उनके उपर महात्मा गाँधी का विशेष प्रभाव पड़ा था और गाँधीजी के विश्वासपात्रों में प्रो. बारी भी एक थे। 1936 में चुनाव हुआ और प्रो. अब्दुल बारी एम.एल.ए. चुने गए। 1937 में बिहार में कांग्रेस की सरकार बनी जिसमें प्रो. बारी डिपुटी स्पीकर चुने गए।

1937 में भारतीय विधान परिषद (इंडियन लेजिस्लेटिव काउंसिल) द्वारा औद्योगिक मजदूरों की रक्षा के लिए लेबर इन्क्वायरी कमिटी गठित करने का निर्णय लिया गया। उसी के अंतर्गत बिहार लेबर इन्क्वायरी कमिटी का गठन किया गया जिसमें डा. राजेन्द्र प्रसाद अध्यक्ष तथा प्रो. आर. के. शरण सचिव और प्रो. अब्दुल बारी (एम.एल.ए.), जगत नारायण लाल (एम.एल.ए), एम.पी. गांधी, डा. राधाकमल मुखर्जी और एन.बी. चन्द्रा सदस्य चुने गए। प्रो. अब्दुल बारी के नेतृत्व में बिहार लेबर इन्क्वायरी कमिटी ने जमशेदपुर का पहला दौरा किया। जमशेदपुर के मजदूरों की परेशानियों

से प्रो. बारी बेहद चिन्तित हुए। कांग्रेस के वरिष्ठ नेता और लेबर एसोसिएशन के अध्यक्ष नेताजी सुभाष चंद्र बोस की हार्दिक इच्छा और मजदूरों की परेशानियों को ध्यान में रखते हुए प्रो. अब्दुल बारी ने जमशेदपुर में टाटा कंपनी के मजदूरों का नेतृत्व करने का निर्णय लिया।

नेताजी सुभाषचंद्र बोस की सलाह पर उन्होंने लेबर एसोसिएशन का नाम बदलने का निर्णय लिया क्योंकि 'लेबर फेडरेशन' नामक एक अन्य यूनियन बन जाने से नाम में समानता होने के कारण मजदूरों का पक्ष कमजोर हो रहा था। प्रो. बारी ने अप्रैल 1937 में लेबर एसोसिएशन का नाम बदल कर 'टाटा वर्कर्स यूनियन' कर दिया। प्रो. बारी अध्यक्ष, माइकल जॉन महामंत्री और टी.पी. सिन्हा कोषाध्यक्ष चुने गए। जून 1937 में प्रो. बारी और टाटा प्रबंधन के बीच एक महत्वपूर्ण समझौता हुआ। 9 दिसंबर 1938 को टाटा वर्कर्स यूनियन सरकार द्वारा पंजीकृत किया गया।

श्रम संगठन का एक नया नाम पड़ा। नये नेता बने और नये विचारों एवं आदर्शों के साथ संगठन की शुरूआत हुई। बाद में चल कर बारी साहब ने जमशेदपुर को केन्द्र मान कर बंगाल, बिहार और उड़ीसा में तांबा उद्योग-मऊभण्डार और मुसाबनी, लौह-खदान - नोआमुण्डी, बादामपहाड़ और गुरूमहिषानी, लाईमस्टोन और डोलामाईट-वीरमित्रपुर, पानपोश, कोयलांचल-धनबाद, झरिया, रानीगंज और इस्पात उद्योग-बर्नपुर, कुल्टी आदि में सशक्त मजदूर आंदोलन का जाल बिछा दिया। 1942 में गांधी जी के 'भारत छोड़ो' आंदोलन में भी प्रो. अब्दुल बारी सक्रिय रहे। अंग्रेजी राज के विरूद्ध बगावत का बिगुल बजाया और भूमिगत हो गये। देश भर में आजादी की लड़ाई संगठित करने के लिये सक्रिय रहे।

इसी दौरान अंग्रेज सरकार ने उनको बन्दी बनाकर जेल भेज दिया। 1944 में प्रो. बारी जेल से अस्वस्थता के कारण रिहा हुए और सीधे जमशेदपुर आ गये। यहां आकर उन्होंने फिर यूनियनों को संगठित किया और सबों को एक सूत्र में बांधा। 1946 में डॉ. राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय सरकार में मंत्री बनकर चले गये। उनके रिक्त स्थान पर प्रो. बारी को बिहार प्रान्तीय कांग्रेस का सभापति बनाया गया।

टाटा वर्कर्स यूनियन के अध्यक्ष की हैसियत से प्रो. बारी ने अपने जीवन काल का अन्तिम समझौता टाटा कंपनी को 27-8-1946 को हड़ताल की नोटिस देकर किया था। प्रो. बारी की सबसे बड़ी देन यूनियन को स्थायित्व प्रदान करना था।

1947 में आजादी मिलने से पूर्व ही देश में साम्प्रदायिक दंगा भड़क उठा। बिहार में भी दंगा भड़का। गांधी जी ने बिहार में 12 मार्च 1947 को दंगा पीड़ित क्षेत्रों का दौरा आरंभ किया। गांधी जी ने जमशेदपुर टेलीग्राम भेजकर प्रो. अब्दुल बारी को जल्द से जल्द पटना आने को कहा। बारी साहब कार से पटना रवाना हुए।

प्रो. अब्दुल बारी, बिहार प्रान्तीय कांग्रेस कमिटी के सभापति का दो हत्यारों द्वारा फतुहा रेलवे स्टेशन के पास खुसरूपुर इलाके में 28 मार्च, 1947 को संध्या 6-29 के लगभग हत्या कर दी गई। पश्चिम में सूर्य अस्ताचल की ओर अस्त हो रहा था। इधर मजदूरों के मसीहा प्रो. अब्दुल बारी अल्लाह को प्यारे हो रहे थे। मृत्यु के पश्चात उनके खादी कुर्ता के पाकेट से एक आना पैसा निकला था। बारी साहब के बारे में गांधी जी ने कहा था कि बारी साहब बहुत ईमानदार थे लेकिन जिद्दी थे।

प्रो. अब्दुल बारी की मृत्यु का समाचार जब जमशेदपुर पहुंचा तो सारा शहर शोकाकुल हो गया। सारे काम-काज बन्द हो गये। उसी दिन संध्या को एल.टाऊन (अब बारी मैदान) में एक बड़ी शोक सभा हुई और लोगों ने उपस्थित होकर बारी साहब को शोक श्रद्धांजलि अर्पित की।

विदेशों में यूनियन के कामों का उदाहरण देते हुए प्रो. बारी हमेशा कहा करते थे- "मजदूरों का अपना एक समाचार पत्र होना चाहिए, प्रेस होना चाहिए, अपना यूनियन भवन होना चाहिए।" इन पर उन्होंने व्यवहारिक रूप से काम किया। मजदूरों में 10 रूपये के शेयर बेचे और देखते ही देखते 3,60,000 रूपये जमा हो गये। बाद में चल कर "मजदूर आवाज" के नाम से एक पत्र निकाला गया तथा "मजदूर पेपर्स लिमिटेड" के नाम से प्रेस खोला गया।

प्रो. अब्दुल बारी ने जमशेदपुर में अपनी कर्तव्यनिष्ठा, लगन और ईमानदारी की बदौलत जिस तरह श्रमिक कल्याण के लिए संघर्ष किया, आज वो भारतीय मजदूर आंदोलन में एक आदर्श बन गया है। प्रो. अब्दुल बारी की हत्या से लाखों श्रमिकों के बीच से मजदूरों का वह मसीहा छीन गया, जिसने स्वतंत्रता आंदोलन के साथ-साथ देश के मजदूर आंदोलन में भी एक मनोवैज्ञानिक परिवर्तन ला दिया था।